लक्ष्मी का आवाहन करते थे तो मीरा के शरीर में आते थे जो हम लोग बैठ करके तिलक आदि लगाते थे। कभी दरबार भी देखी थी क्या? आएगी जब तब ये साक्षात्कार वगैरह जास्ती होगा।....रहते ही नहीं हैं। भले जैसे यह दिलवाला मंदिर है तो अभी प्रैक्टिकल में यह है, जो पार्ट बजा रही है। अभी ये तो उनसे मिलेंगे भी नहीं। न उन लोगों के पास कुछ भी चित्र हो सकते हैं। साक्षात्कार किया (जिन्होंने उनको) कितना निश्चय होगा! बहुत ही वो ध्यान में जा करके निश्चय करते थे और बड़ा भारी–2 पार्ट बजाते थे। आज देखो ऐसे भी नहीं हैं यहाँ। कोई भी मंदिर में जाकर ऐसे नहीं कह सकेंगे कि कैसे–2, ये मंदिर क्यों बने हैं? जिन्होंने पास्ट में क्या किया था जो भक्तिमार्ग में इनके चित्र बने? यह तुम्हारे सिवाय और तो बिचारे कुछ भी नहीं जानते हैं। ज़रा भी नहीं जानते हैं। ये शास्त्र बनाए हैं, यह भी एक वण्डर है। फिर भी बनने तो हैं और ऐसे ही बनेंगे। कुछ न कुछ गलती है जो कुछ न कुछ गाया जाता है कि ब्रह्मा द्वारा जो भी सार है (वो) बताते हैं; क्योंकि उन शास्त्रों में कोई सार नहीं है। तो खुद बैठकर सार बताते हैं; क्योंकि उनसे कोई को कुछ फायदा नहीं हो सकता है। वो बाप बैठ करके बच्चों को समझाते हैं। तो ये सभी कर्मकाण्ड के शास्त्र होने के कारण ये भक्तिमार्ग के लिए रखे हुए हैं और इस समय भक्तिमार्ग में भी कितनी अच्छी तरह से बहुत ही भाव से पढ़ते हैं। महाभारत में, रामायण में कितने बड़े–2 का सबका भाव है। देखो, मैसूर का महाराजा जैसा (उनका) इस रामायण में कितना भाव है। अपना भी तो भाव था ना। लंका लूटने जाते थे, बहुत रुचि से पढ़ते थे, सुनते थे। अब जब बाप ने (समझाया है कि) सच क्या है, इन शास्त्रों में क्या रखा है, जो वो पढ़ते–2 कुछ फायदा तो होता नहीं है। बाप समझाते हैं तो नयों को बड़ा मुश्किल बुद्धि में बैठे, जब तलक कोई को अच्छी तरह से न समझाया जाए। समय नजदीक आएगा; क्योंकि सभी पढ़ते तो थे ना। जैसे बाबा गीता भी पढ़ते थे, रामायण, महाभारत, वेद, भागवत वगैरह सभी सुनते तो थे ना; जैसे और अभी सुनते हैं। ये सभी जो भक्ति के कर्मकाण्ड हैं उनको तो फिर भक्ति छोड़ना ही पड़े, जबकि ज्ञान जिन्दाबाद होता है और वो मुर्दाबाद होती है। बरोबर विनाश हो जाएँगे, भक्ति विनाश को पाएगी यानी फिर भक्ति नहीं होगी। विनाश का अर्थ ही हो जाता है कि 5000 वर्ष के बाद फिर भक्ति होगी। मनुष्य मरते हैं तो ऐसे नहीं कहेंगे कि 5000 वर्ष के बाद (आएँगे)। फिर तो कहेंगे कि दूसरा जन्म लेंगे। ये सभी शास्त्रों के लिए समझाया जाता है कि ये शास्त्र फिर न होंगे। फिर करके (द्वापर में) फिर भी निकलेंगे, फिर आकर ये जो शास्त्र हैं इनका सार सुनाऊँगा। मनुष्य ड्रामा का सुन करके जब ये बातें सुनते हैं तो बहुत मूँझते हैं। ऐसे कैसे हो सकता है? विनाश हो जाएगा, फिर शास्त्र कैसे (बनेंगे)? वो ऐसे ही फिर बनकर तैयार हो जाएँगे? ड्रामा में कई–2 मनुष्य मूँझते भी बहुत हैं और ज्ञान लेना बंद भी कर देते

हैं। कितना प्यार रहता है इस मुरली से, टेप से। टेप में कितना प्यार है जो मुरली बंद कर देते हैं...(तो) टेप में सुनते हैं। फिर तूफान लगता है तो बस, टेप से भी सुनना बंद कर देते हैं। .....वो समझते हैं कि स्कूल बंद कर दिया माना फिर पढ़ने का नहीं है। खतम हुआ जैसे। करके पिछाड़ी में ऐसे–2 फिर आते हैं। तो फिर देरी भी हो जाती है, ठोकर भी लग जाती है। जितना जास्ती जमा होती है उतना फिर (ना) भी हो जाती है।..... जैसे बाबा (ने) प्रश्नावली लिखी। तो इस समय तक फिर कोई ने ऐसा समाचार नहीं लिखा है कि बाबा, इस प्रश्नावली से जब कोई आते हैं, जैसे ये बढ़ाते हैं तो ये इन्हीं के काम में आने वाले हैं। ये टेबल पर रखे हैं या नहीं? अभी तो बाहर में रखे हुए हैं; पर टेबल पर कुछ लिखे हुए रखे हैं ? नहीं। ये रख देना चाहिए। सिर्फ यही थोड़ा। उनको माता भी कहते हैं, पिता भी कहते हैं। उनके लिए भी पिता कहते हैं। कुछ समझते हैं ? अच्छी तरह से उनकी रग समझ सकते हैं, वहाँ उनको फिर समझाना अच्छा रहता है। जो गीता के बनिस्बत लिखा हुआ है, उनसे भी ये प्रश्नावली जैसे सर्विसेबुल है ; पर कहाँ तक ये कोई को सुनाते हैं?.....इस बीच में कोई ऐसा आया नहीं है। तुमने किससे पूछा है ? (किसी भाई ने कहा– हमारे यहाँ एक दफा एक/दो सन्यासी आए थे उनसे पूछा था तो उन्होंने कहा था हमको मालूम नहीं है) मालूम ही नहीं है बोला? (भाई ने कहा– हाँ, उसने कहा) यानी परमपिता परमात्मा से आपका क्या संबंध है (पूछने से वो) बोला मालूम नहीं है? (भाई ने कहा– हाँ, वो सन्यासी तो ब्रह्म को मानते हैं। फिर हमने कहा, उनको सारी दुनिया वाले कहते हैं कि परमपिता परमात्मा हमारा पिता है। तो कहने लगा, यह तो बात ठीक है। तो उसके लिए उसने लिखा था कि शिवपुरी में रहता है शिव।) ...बाप वहाँ रहता होगा तो जो बच्चे हैं जो तुम कहते हो कि मेरा बाप वहाँ रहेगा तो तुम भी वहाँ रहने वाले होंगे। पिता के पास जाना चाहते हो?.....ऐसे हो तो मालूम पड़े कि ये लोग क्या समझते हैं। इस हिसाब से उनकी बुद्धि में कुछ बैठता है या नहीं। तो यहाँ बाबा को लिखना चाहिए। जो इन्वेन्शन निकालते हैं उनको लिखना तो चाहिए ना। बच्चों में ऐसी भी बुद्धि नहीं है जो फिर क्या हुआ, 2/5/7 से प्रश्न पूछा (तो) इसका क्या नतीजा निकला। फिर मोदक लिखते नहीं हैं। (म्युज़िक बजा) मीठे–2, ज्ञान सितारों प्रति मात–पिता, बापदादा का यादप्यार, गुडनाइट।